श्री राम किहा

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

पोह कहे मैं दस्सां नाल प्यार, भेव अगम्म खुलाईआ। नौं परविष्टे दिवस विचार, त्रेता जुग ध्यान रखाईआ। राजा जनक मिथलपुरी सिकदार, धर्म दी धार वडयाईआ। पहाड़ लहंदे दी दिशा गिआ नाल विचार, आपणा पन्ध मुकाईआ। तक्कया खेल सची सरकार, हरि करता रंग वखाईआ। जोबनवन्ती दिसी इक्क नार, जो नर नरायण लिख के गल विच्च लटकाईआ। रसना तूं ही तूं ही रही उच्चार, हिरदे अंदर हरि लिव लाईआ। कदे कदे नैण लए उघाड़, अक्खी फेर बन्द कराईआ। फिरे विच्च उजाड़, जंगल चाईं चाईंआ। रोवे ज़ारो ज़ार, नैणां नीर वहाईआ। मिले माही मेरा निरँकार, निरवैर अंग लगाईआ। जिस दी सिक विच्च बीते इक्क सौ वीह साल, जगत तृष्ना ना कोई रखाईआ । फिरदी वांग कंगाल, तन बस्तर ना कोई सुहाईआ। खुले रक्खे वाल, वैरागण रूप वटाईआ। जनक दे कोल कीता आ सवाल, प्रेम नाल सुणाईआ। दस्स किथ्थे मेरा भगवान, मैनूं दे मिलाईआ। जनक अन्तर आया ज्ञान, दृष्टी दृष्टी विचों बदलाईआ। एह भगती विच्च महान, पूरब जन्म दी सोभा पाईआ। जेकर एहदे घर हो जावे सन्तान, उस लोकमात मिले वड्डयाईआ। मेरी इच्छया इच्छया बलवान, प्रभ दी आस रखाईआ। हर घट इशारा कीता नौजवान, उगल असमान वल उठाईआ। उह तक्क मेरा मेहरवान, जो हर घट रिहा समाईआ। जिस दे कोलों तैनूं दे के चल्लया दान, वस्त अमोलक तेरी कुक्ख टिकाईआ। जो मेरे घर होवे परवान, गृह मन्दर सोभा पाईआ। उस दा झुल्ले फिर निशान, निशाना जगत जणाईआ। जिस नूं प्रगट हो के मिले राम, राम रामा रूप बदलाईआ। तेरा लेखा रक्खे विच्च जहान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। फिर जनक ने हत्थ लाया उत्ते धनुख बाण, चिल्ला तीर

तरकश दित्ता हिलाईआ। फेर हुक्म दित्ता जाह आपणे मन्दर मकान, सुख आसण सोभा पाईआ। जिस वेले समां बीत्तया खेल होए महान, महिमां अकथ्थ कथी ना जाईआ। तेरे गृह जन्मे बाल अंञाण, बाली बुध वड्डयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

पोह कहे नौं पोह दिवस सी चंगा, सोहणी रुत्त सुहाईआ। प्रेम धार वहे गंगा, गंगोतरी रंग वखाईआ । सच दा आया अनन्दा, ठंडी पवण सुहाईआ। जिस दा भेव जाणे ना कोई पंडा, शास्त्र कहण कोई ना आईआ। एह खेल साहिब बख्शंदा, हरि करता रिहा कराईआ। लेखा जगत जहान जीव संदा, संध्धया दा वक्त सुहाईआ। जिस तपसणी दे कोल नहीं कोई बन्दा, उह किँवला बणी जणेंदी माईआ। मेहर करे गुणी गहिंदा, हरि दाता वड्ड वड्डयाईआ। कन्या रूप पंज तत्त सोहँदा, सोहणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग चढ़ाईआ।

नौं पोह कन्या लिआ जन्म, सीता सति सति वडयाईआ। मईआ रिहा भरम, भरम विच्च भवाईआ। एहो मेरा धर्म, जनक दी झोली दिआं टिकाईआ। जिस दा ना कोई ज़ात ना कोई धर्म, ब्रह्म ब्रह्म विच्च समाईआ। शब्दी धार पूरा होया परन, परम पुरख दित्ती वड्डयाईआ। उधरों आ गिआ इक्क हरन, छलांगाँ मारे चाईं चाईंआ। किँवला दे आ के लग्गा चरन, नीवां मुख वखाईआ। तपसणी लग्गी फड़न, उस ने सीस दित्ता झुकाईआ। ओन झट्ट सीता बन्न के लड़न, उहदे गल दित्ती लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा लेखा आप प्रगटाईआ।

हिरन गल बध्धी सीता, सति सति वडयाईआ। उधरों जनक दी वेखो रीता, इक्क सौ इक्क साथी नाल चल्लया चाईं चाईंआ। जिथ्थे कौल इकरार सी कीता, ओस धाम पुज्जया आपणा पन्ध मुकाईआ। ओधरों मिरग आया ठीका, आपणा बल धराईआ। कोलों रोया बाल निक्का, कूक कूक सुणाईआ। जिस वेले माणस सुणीआं चीकां, हुक्म सुणया शहनशाहीआ। जनक ने मारीआं तिन्न लीकां, लाईनां तिन्न बणाईआ। इस नूं फड़ो नाल तौफीका, आपणा बल धराईआ। मिरग आ गिआ नज़दीका, नेड़े आ के सीस झुकाईआ। आह लेखा लै लै जी जी का, जीवण तेरे हत्थ फड़ाईआ। जनक ने ध्यान धरया उहनूं वक्त याद आया ठीका, जो रसना बचन दित्ता सुणाईआ। उस कर के सच प्रीता, आपणी गोदी लई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम प्यार दी धार दस्से रीता, त्रैगुण तों बाहर आपणा खेल खिलाईआ। (६ पोह श सं ६ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड मलक कैंप)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जनक ने कन्या वल कीती अक्ख, उंगल मस्तक उत्ते टिकाईआ। प्रभ दा नूर दिस्सया प्रतक्ख, साख्यात सोभा पाईआ। फेर जैकारा सुणया अलक्ख, अगम्म अगोचर दित्ता दृढ़ाईआ। तेरा जगत जहान वाला नत, रिस्ता तन वजूद वखाईआ। ओधरों हिरन नेड़े आ गिआ झट्ट, मुख उपर लिआ उठाईआ। धुर दा हुक्म सुणया सच, सुनेहड़ा बेपरवाहीआ। खुशीआं नाल पिआ हस्स, करवट लई बदलाईआ। तेरा खेल प्रभू समरथ, आदि अन्त समझ किसे ना पाईआ । हुण इस कन्या होणा धर्म दवार दे वस, जन्म सपुत्री जगत वड्डयाईआ। चौदां साल धोणा नहीं मूंह हत्थ, बाल अवसथा इस दी वड्ड वड्डयाईआ। जोती जोत सरू हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।

हिरन ने जनक कीती प्रनाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। फिर निगह मारी तमाम, नैण अक्ख उठाईआ। फेर तक्कया राम दा राम, पंज तत्त वजूद सुहाईआ। फेर वेख्या अन्धेरा शाम, नूर ना कोई चमकाईआ। फेर जाणया खेल महान, जूहां जंगल खोज खुजाईआ । फेर बनबासी रूप तक्कया भगवान, भगवन आपणी कल वखाईआ। फिर रावण दा तक्कया निशान, लंकापती की राह तकाईआ। फिर हिरन ने वेख्या बीआबान, निझ नेत्र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक्क रंगाईआ।

हिरन ने किहा जनक आह लै आपणी वस्त, तेरी झोली पाईआ। फेर खेल होणा उत्ते धरत, धरनी धवल वेख वखाईआ। मैं फिर आवां परत, पतिपरमेश्वर मैनूं रिहा जणाईआ। जिस राम पिच्छे राम दी धार आई उत्तों अर्श, अर्शी प्रीतम दित्ती वड्डयाईआ। पूरब दा लहणा मुक्कया कज़, लेखा रिहा ना राईआ । अग्गे खेल करना असचरज, अचरज लीला देणी वरताईआ। योधा सूरबीर मरदाना बण के मर्द, आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ।

मिरग ने किहा वेख मेरा नैण, नैण नैण नाल मिलाईआ। मैं संदेशा आया कहण, कह के दिआं सुणाईआ। जिस ने तेरी सिफ्तां भरी लिखी रमायण, राम रामा वड्ड वड्डयाईआ। उस दा अन्त रहणा नहीं कोई सैण, सज्जण आपे अखवाईआ। दिवस रैण मिले ना चैन, बल खोजे थाउं थाईंआ। जिस वेले समां पहुँचया ऐन, वक्त वक्त नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ।

हिरन किहा जनक, जनक सपुत्री खेल खलावांगा। धुर दा हुक्म वेख वखावांगा। लंकापती नाल मिलावांगा। रावण रूप अनूप दरसावांगा । बंक दवारे सोभा पावांगा । राम राम दी वंड वंडावांगा। ब्रह्मण्डां पड़दा लाहवांगा। चंड प्रचंड दा रूप धरावांगा । जगत धार धार लँघ, आपणी कल वरतावांगा। जिस दा राम नाल संग, सो संग विछोड़ा विच्च रखावांगा। एह खेल सूरा सर्बंग, दूसर अवर ना कोई जणावागा। जिस ने त्रेता करना भंग, दुष्ट हँकारीआं गढ़ तुड़ावांगा। मैं तेरे दर तों इक्को वार मंगी मंग, मांगत हो के

झोली डाहवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त सभ दा लहणा देणा लेखा जाणे ब्रह्मण्ड खण्ड विच्च वरभंड, ब्रह्मादी अनादी आपणा पड़दा लाहीआ। (६ पोह शहनशाही सम्मत ६ रसैल सिँघ दे गृह पिण्ड मनावर)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

मिरग किहा तेरी धर्म धार सी अंस, पारब्रह्म ब्रह्म दित्ती वड्डयाईआ। तेरा सति सति दा बंस, सरबंस वज्जे वधाईआ। जिस दा अनन्द कारज होणा नाल धनुष, जगत रीती ना कोई वड्डयाईआ । जगत मनसा रहे ना शंक, सहसा देणा चुकाईआ। जिस खेल करना त्रेता अन्त, अन्त आपणा रूप धराईआ। सच विहार बणाए बणत, गुरदेव स्वामी संग रखाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं किसे जन्नत, स्वर्ग ना रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।

जनक ने वेख्या ध्यान कर अन्तर, अन्तश्करन तों बाहर खोज खुजाईआ। प्रभ दा खेल दिस्सया निरंतर, निराकार रिहा वखाईआ। जिस दे विवाह दा पढ़ना नहीं किसे वेद मंत्र, वेदी विद्या नाल ना कोई वड्डयाईआ। खुशी होणी गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां वज्जे वधाईआ। जिस ब्रह्मे दे बीते अनेक मनवन्तर, बैठा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ।

जनक ने निगह मारी वेख्या अगम्म विचार, परम पुरख दृढ़ाईआ। जिस विच्च झगड़ा नहीं कोई समाज, जगत रीती ना कोई वखाईआ। धर्म दे पती दा धर्म दा ताज, धर्म दी रक्खया करे चाईं चाईआ। राम राम दा मुहताज, दूजी लोड़ ना कोई रखाईआ । सीता सति दा लै के दाज, धुर दरबार दी तृष्ना इक्क रखाईआ। कूड़ी क्रिया छड्ड के राज, रईअत लेखा दए मुकाईआ। जिन चौदां साल मुख धोता नहीं पित मात, चौदां साल बनबासी रूप प्रगटाईआ । रघुपत दा देणा साथ, पती पतवन्त सेव कमाईआ। एह खेल शंकर वेखे उपर कैलाश, कलधारी आपणा पड़दा लाहीआ। जिस राम ने रावण दा करना नास, त्रेता तीआ रूप बदलाईआ। सति दी सति दा होणा दास, सीता सति विच्च समाईआ। जिस नूं वेखण पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण जाणे खेल तमाश, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा हुक्म वरताईआ। (६ पोह शहनशाही सम्मत ६ साहिब सिँघ दे गृह पिण्ड मनावर)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जनक सपुत्री अवसथा बाल, बाली बुद्ध ध्यान लगाईआ। प्रभ मिले दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। मेरी सुरती सुरत लए संभाल, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। झगड़ा मेट के शाह कंगाल, इक्को रंग दए रंगाईआ। जिस त्रेते अवल्लड़ी चलणी चाल, चाल निराली इक्क पगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ।

दुलारी आया धुर संदेशा, धुर दे राम दित्ता दृढ़ाईआ। तेरा राम दे राम नाल लेखवा, लिखत धुर दी दए गवाहीआ। छड्डणा पैणा बाबल देसा, मिथलपुरी पन्ध मुकाईआ। अयुध्या होणा वेसा, दसरथ रुत्त सुहाईआ । फेर सौहरा रहणा नहीं पेका, दोवें देणा तजाईआ। राम दे राम ने बदलणा भेखवा, बनबासी रूप प्रगटाईआ । झट्ट सीता ने आपणा मस्तक वेखवा, नैण नैण वखाईआ। फेर प्रभ नूं मथ्था टेका, सीस दित्ता झुकाईआ। तेरा खेल वार अनेका, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

जनक दुलारी तक्कया उपर असमां, असमानी धार पार कराईआ। ना कोई पिता दिसया ना कोई मां, संगी संग ना कोई निभाईआ। ना कोई राग तराना शब्द दिसया नां, सिफ्ती वाली ना कोई पढ़ाईआ। ना कोई संगी साथी पकड़े बांह, सगला संग ना कोई निभाईआ। सतिजुग त्रेता लोकमात करे वाह वा, वाहवा तेरी वड्ड वड्ड।याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जगत समाज दा चल्लया राह, दीन दुनी वंड वंडाईआ। फेर वेखे थल अस्गाह, जलां तों पार अक्ख उठाईआ। उफ हाए मेरे राम ने हो जाणा मैथों जुदा, की करता कल वरताईआ। बाली बुद्ध कर सकी ना कोई निआं, प्रभ दे अग्गे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लहणा देणा जाणे थाउँ थां, थान थनंतर वेख वखाईआ। (६ पोह शहनशाही सम्मत ६ तोती देवी दे गृह पिण्ड निगिआल)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जनक तक्की आपणी करनी, प्रभ भगती वेख वखाईआ। जिस विच्च इक्क दी मिली सरनी, सरनगत इक्क अखवाईआ। जिस दी इक्को तुक सभ ने पढ़नी, आत्म परमात्म राग गाईआ। उह लेखा जाणे चोटी जढ़नी, जढ़ चेतन्न फोल फुलाईआ। जिस दे हुक्म नाल सीता खारे चढ़नी, खालस आपणी कार भुगताईआ। उस दा लेखा कोई ना जाणे हरनी फरनी, राम दा राम बेपरवाहीआ। जिस दी धार धार नाल लड़नी, सति असति नाल दए टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

जनक वेखी धार अनोखी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस नूं समझे कोई ना मातलोकी, लोक लोकांत पड़दा ना कोई उठाईआ। जिस दी भेटा हो ना सकण माणक मोती, हीरे लाल जवाहर ना कोई चतुराईआ। जिस दी आदि तों जगदी जोती, अन्तम जोत रुशनाईआ। जिस दी सिफ्तां वाली सारे पढ़न पोथी, पुस्तक हत्थां विच्च उठाईआ। मंज़ल मिले ना औखी, दर ठांडा ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

जनक दे अंदर होया इक्क इशारा, सहज सहज दरसाईआ। औह वेख खेल अपारा, अपरम्पर रिहा दृढ़ाईआ। जिस सीता दा राम नाल प्यारा, प्यार मुहब्बत विच्च समाईआ। उस दा होणा अन्त किनारा, विछोड़े विच्च कुरलाईआ। जुग बीत्तया सारा, महांसारथी आपणा रंग रंगाईआ। जिस लेखा लिखया बण के बालमीक बटवारा, भेव अभेदा दए जणाईआ। फेर छड्डुणा पए जगत संसारा, नाता मात तुड़ाईआ। उठ वेख कलिजुग अन्ध अन्धयारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। राम दा राम कल कलकी लए अवतारा, कल आपणी कल प्रगटाईआ। जिस नूं झुकणे पैगम्बर गुर अवतारा, बैठण सीस निवाईआ । उस दा खेल होणा धरनी धरत उत्ते अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी आपणी कार कमाईआ। सीता दा सति दा बणना सहारा, सुरत शब्द नाल कुड़माईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर करे आप निरँकारा, भगत भगती विच्च भगवन मिलण कोई ना पाईआ। फेर जोत दा दे चमत्कारा, नूर नुराना दए दरसाईआ। जनक झट्ट कीती निमस्कारा, निउँ निउँ लागा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहनशाह तेरा आदि अन्त दा इक्क सहारा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। (६ पोह शहनशाही सम्मत ६ शाहणी देवी दे गृह)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

बालमीक ने मुख विच्च पा लई कानी, कलम कालम लिखण तों लई बचाईआ। अन्तर आई हैरानी, हैरत विच्च ध्यान लगाईआ। निगह कर उपर असमानी, निझ नैण कर रुशनाईआ। तक्की परम पुरख जोत नुरानी, नूर नुराना सोभा पाईआ। जिस दा खेल अवतार जिस्म जिस्मानी, तत्तां रंग रंगाईआ । शब्द दे धुनकानी, नादी नाद सुणाईआ। राम दा राम दिसे बानी, बनबासी वेखे चाईं चाईंआ। जिस दी खेल दो जहानी, जनक सपुत्री समझ कोई ना आईआ। फेर करया चरन ध्यानी, प्रभ चरन सीस झुकाईआ। मेरी विद्या दी नहीं कोई विद्वानी, विद्दत माण ना कोई रखाईआ । परम पुरख कर मेहरवानी, मेरा अन्तर मंग मंगाईआ। अबिनाशी करते संदेशा दित्ता बिनां ज़बानी, फ़रमाणा धुर दा इक्क दृढ़ाईआ। उठ वेख त्रेता ना रहे निशानी, राम रावण संग रलाईआ। द्वापर खेल होणा हैरानी, हैरत विच्च सर्ब कुरलाईआ। कलिजुग अन्तम शाह पातशाह शहनशाह लेखा

जाणे जाण जाणी, जानणहार आपणे हत्थ रक्खे वड्डयाईआ। जिस वेले दीन दुनी विच्च होई बेईमानी, बेवा रूप होए लोकाईआ। प्रगट होवे योधा सूरबीर बलवानी, बलधारी इक्क अखवाईआ। जिस दा लेखा जाणे ना कोई ज्ञानी, जगत विद्या सार कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा रिहा दृढ़ाईआ।

बालमीक कलम फड़ के हत्थ, हत्थ पेशानी उत्ते टिकाईआ। बेनन्ती कर अग्गे पुरख समरथ, सीस जगदीस दित्ता झुकाईआ। तेरा लेखा अकथ्थना अकथ्थ, कथनी कथ्थ, ना सके राईआ। मैनूं अगला मार्ग दस्स, पड़दा दे चुकाईआ। अबिनाशी करता पिआ हस्स, जोती धार शब्द शनवाईआ। उठ बटवारे खोल्ह अक्ख, धाड़वी तैनूं धाड़ा दिआं वखाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़िआर दा वेख हट्ट, सति धर्म ना कोई विकाईआ। झगड़ा पए तीर्थ तट्ट, मानव मानव नाल टकराईआ। उस वेले होणा साहिब प्रगट, पारब्रह्म प्रभ धुरदरगाहीआ। जिस राम ने राम सीता जाणी छड्ड, लोकमात नज़र कोई ना आईआ। उस दा खेल होणा विच्च जग, जगजीवण दाता आपणी कार भुगताईआ। भेव खुल्हाए उपर शाह रग, हरिजन साचे लए मिलाईआ। सीता धार बन्न्हणा तग, नाम निधाना गंढु पवाईआ। खेल वेखणा सूरे सर्बग्ग, साहिब सतिगुर आपणा भेव चुकाईआ। जिस वेले सृष्टी दी दृष्टी विच्च जगत वासना कूड़ कामना लग्गणी अग्ग, तम्हां तृष्ना ना कोई मिटाईआ। प्रभू दा प्यार सारे जाण छड्ड, संगी संग ना कोई वखाईआ। गुर चेले होवण अड्ड, मुरीद मुशर्द ना गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ।

बालमीक कलम नूं कीता पुट्ठी, नेत्र वेख वखाईआ। निगह मारी चारे गुठ्ठीं, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण खोज खुजाईआ। सृष्टी सारी दिसदी रुस्सी, प्रभ दा प्यार ना कोई निभाईआ। जिस दे पंज तत्त जुस्सी, ज़मीर सके ना कोई बदलाईआ। मन कल्पणा सभ नूं रही कुस्सी, जगत लालच ना कोई चुकाईआ। मुहब्बत हक़ रही ना उक्की, निशाना उक्कया थाउँ थाईंआ। प्रभ नूं गाउणा मुशकल हो जाए दो तुकी, आत्म परमात्म राग ना कोई अलाईआ। सृष्टी जगत प्यार दी होवे भुक्खी, प्रभू प्रेम ना कोई वखाईआ। आसा रक्खे जन्म मरन दी कुक्खी, चुरासी पन्ध ना कोई मुकाईआ। एह खेल रहे ना लुकी, पुरख अकाला दए वड्डयाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं अन्तम ढुकी, आपणा पन्ध मुकाईआ। सीता राम राम सीता इक्क दूजे दी करन बुत्ती, बुतखानयां विच्च ध्यान लगाईआ। अबिनाशी करता आपणी मेहर नाल बेशक भगतां नूं आपणी गोद लए चुक्की, भगती वांग भगत भगवन मिलण कोई ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होई दुखी, दुखीआं दर्द ना कोई गवाईआ। उस वेले बालमीक ने इक्क कूक मारी उच्ची, कूक के दित्ता सुणाईआ। निरमाणता विच्च इक्क गल्ल पुच्छी, निउँ के सीस झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेरे साहिब तुठीं, मेहर नज़र उठाईआ। जिस वेले सच दी धार जाए लुट्टी, कलिजुग लुटेरा आपणा बल वखाईआ। उस वेले जन भगतां उजल करीं मुखी, दुरमत मैल आप धवाईआ। लोकमात

मार झात आप पुच्छीं, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सति धर्म दी साची देवी बुद्धि, सोझी आपणी इक्क वखाईआ। तेरी रमज़ रहे ना गुझी, पड़दा अंदरों देणा उठाईआ। प्रेम दी धार रहे ना दूजी, एका रंग देणा रंगाईआ। पत्तित पुनीत करनी बुद्धि, कूड़ कुड़िआर दा डेरा ढाहीआ। लेखा मुकाउणा वदी सुदी, मस्सया अमावस वंङु ना कोई वंङाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस वेले कलिजुग दी औध पुग्गी, औध दे मालक अन्त होणा आप सहाईआ। (६ पोह श सं ६ फुमण सिँघ दे गृह पिण्ड छंब)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

बण विच्च सीता राम दा चरन झस्सया, सहज सहज नाल दबाईआ। राम करवट विच्च बदल के अक्खया, अक्ख लई उठाईआ। फेर खुशीआं दे विच्च हस्सया, हस्स के दित्ता सुणाईआ। कमलीए औह तक कलिजुग अन्धेरी मस्सया, सतिजुग साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। हिरदे हरि किसे नहीं होणा वस्सया, सगला संग ना कोई बणाईआ। जगत दवारा होणा ढङया, गढ़ बंक ना कोई सुहाईआ। अग्ग लग्गे तत्त अङया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मत बुध कुरलाईआ। पिता पुत्त दी करे हत्या, नार कन्त विछोड़ा दिसे थाईं थाईंआ। धर्म चलावे कोई ना हट्टया, वणजारा वणज ना कोई बणाईआ। भाग लग्गे ना किसे काया मट्टया, त्रैगुण अगनी सर्ब जलाईआ। फिर हत्थ मार उपर पट्टया, पटने वाला वेख वखाईआ। जिस दा लेखा होणा नाल पुरख समरथया, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। फेर राम ने आपणा पासा वट्टया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक्क वखाईआ।

राम किहा सीता आपणा नेत्र खोलु, सुरती राम विच्च समाईआ। प्रेम कंडे तराज़ू तोल, जगत लेखा सहज सुभाईआ। उठ वेख कलिजुग वजदा ढोल, डौरू डंका रिहा सुणाईआ। सच वस्त रहे किसे ना कोल, खाली बंक दवारे दिसण थाईं थाईंआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म करे कोई ना चोहल, सीता सुरत धुर दे राम ना कोई मिलाईआ। अनबोलत सुणे कोई ना बोल, अनरागी राग ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

सीता कहे मेरे धुर दे राम, राम राम दे जणाईआ। की एह खेल होणा तमाम, तमां विच्च होवे जगत लोकाईआ। राम ने किहा एह खेल श्री भगवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कूड़ कल्पना विच्च जहान, जहालत भरी होवे लोकाईआ। ओस वेले पैगम्बरां दा होणा इस्लाम, समां समें विच्चों बदलाईआ। शरअ दी चले कलाम, राम नाम ना कोई वङुयाईआ। मंत्र होर होणा सतिनाम, फतह डंका इक्क शनवाईआ। सृष्टी दृष्टी होणी हैरान, हैरत विच्च सर्ब कुरलाईआ। मज़बां दा बणना सर्ब गुलाम, शरअ जंजीर

ना कोई तुड़ाईआ। पतिपरमेश्वर होणा बदनाम, बदी दा पन्ध ना कोई चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ।

सीता हत्थ रक्खया उपर ठोडी, उंगली नाल दबाईआ। राम दे चरन छोहे मस्तक लाया नाल गोड्डी, नेत्र नीर वहाईआ। मैनूं नज़र आउँदा कलिजुग अन्त खेल होणा वेदी सोढी, सोढ बंस मिले वड्डयाईआ। झगड़ा मेटणा जञ्जू बोदी, रूप अनूप लए बदलाईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी देणी सोधी, शुद्ध आपणा आप वखाईआ। उह परम पुरख दा होणा जोगी, जुगीशर धुरदरगाहीआ । जिस हउमे मेटणा रोगी, ममता मोह दए मुकाईआ। उहदा इक्को शब्द होणा सलोकी, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग आप बदलाईआ।

सीता कहे मेरा अंदरों खुल्ल्या पड़दा, राम राम दिआं जणाईआ। खेल वेख्या लहन्दा चढ़दा, पहाड़ दक्खण फोल फुलाईआ। मैं इक्को नूर तक्कया नरायण नर दा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जो मालक निहचल धाम अट्टल दा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दा दीपक जोती बलदा, दो जहानां करे रुशनाईआ । उस झगड़ा मुकाउणा कलिजुग कल दा, कल कलकी वेस वटाईआ। उह मालक जल थल दा, महीअल रिहा समाईआ। जो लेखा जाणे घड़ी पल दा, जुग चौकड़ी आपणे विच्च टिकाईआ। आत्म परमात्म धार हो के रलदा, नूर नुराना डगमगाईआ। उस दा वेस अव्वलड़ा दिसे अछल अछल्ल दा, वल छल धारी आपणा हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

सीता कहे मैनूं हुंदा जाए इशारा, राम राम मेरी दुहाईआ। कलिजुग अन्तम दिसे किनारा, सतिजुग सच चन्द रुशनाईआ। इक्को नूर नूर उजिआरा, जोती जाता डगमगाईआ। सम्बल बैठा धाम न्यारा, साढ्ढे तिन्न हत्थ वज्जे वधाईआ। जिस दा शब्द शब्द दुलारा, सूरबीर इक्क अखवाईआ । उह मेटे धूंआंधारा, नूरी चन्द इक्क चमकाईआ। जिस दा लेखा कागत कलम ना लिखणहारा, शास्त्र देवे ना कोई गवाहीआ। उह सभ दा सांझा मीत मुरारा, परवरदिगार नूर खुदाईआ। जिस ने लेखा चुकाउणा काया साढ्ढे तिन्न हत्थ मुनारा, गृह मन्दर आप सुहाईआ। दीन मज़हब दा झगड़ा मेटणा विच्च संसारा, सिर सके ना कोई उठाईआ। मेरी चरन कँवल निमस्कारा, राम रामा सीस झुकाईआ। चरन धूड़ लावां छारा, टिक्का ख़ाक रमाईआ। जिस दा आत्म परमात्म परमात्म आत्म धर्म दी धार होणा नाअरा, नर नरायण आपणा डंक वजाईआ। सो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वेखे विगसे वेखणहारा, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण नित नवित्त लए अवतारा, अवतरी आपणा हुक्म हुक्म विच्च वरताईआ। (६ पोह श सं ६ प्रताप सिँघ दे घर पिण्ड दड़)

★ ★ ★ ★ ★

राम किहा सीता आह तक्क लै कलिजुग कल, कलकाती नज़री आईआ। चार कुण्ट दह दिशा मन कल्पणा वधणा छल, अछल छलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। पवित्र रहे ना तीर्थ अठसठ जल, अमृत सरोवर रस ना कोई वखाईआ। फिरे दुहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ महीअल थल, अस्गाह देण दुहाईआ। दूई द्वैती शरअ शरीअत सभ नूं लग्गणा सल, हउमे रोग ना कोई मिटाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म निरगुण निरगुण सके कोई ना रल, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोई मिलाईआ। सति धर्म दा रहे कोई ना बल, बलहीण होई लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ।

राम किहा उठ वेख मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। वेख खेल श्री भगवान, नर हरि नरायण आप जणाईआ। जिस दा जोधा सूरबीर सुत दुलारा नौजवान, गोबिन्द सूरा सोभा पाईआ। जिस ने शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश देणा इक्क ज्ञान, ज़ात पात दीन मज़हब दा डेरा ढाहीआ। अमृत रस दस्सणा पीण खाण, दुरमत मैल करे सफाईआ। तरकश तीर खड़ग खण्डा किरपान, शस्त्रधारी नज़री आईआ। जिस दा लेखा लहणा विच्च जहान, जहालत कूड़ी दए मिटाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी मारे ध्यान, सत्तां दीपां अक्ख खुल्ह़ाईआ। कलिजुग मेटे कूड़ निशान, धरनी धरत धवल धौल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड्ड वड्डयाईआ।

सीता किहा राम कवण होवे गोबिन्द सूरा, सूरबीर दे दृढ़ाईआ। राम किहा पुरख अकाल दा जोती नूरा, नूर नुराना डगमगाईआ। सति धर्म विच्च होवे पूरा, पूरन ब्रह्म दए समझाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया हूंझे कूड़ा, सति सच दा मार्ग इक्क प्रगटाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूड़ा, अमृत जाम प्याला हत्थ उठाईआ। कोझयां कमलयां रंग चाढ़े गूड़ा, दो जहानां नज़र कदे ना आईआ। चरन कँवल बख्शे धूड़ा, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। पन्ध मुका के नेड़ दूरा, घर इक्को इक्क सुहाईआ। शब्द अनादी दे के तूरा, तुरीआं तों परे पर्दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी खेल खिलाईआ।

सीता किहा राम गोबिन्द होवे कौण, प्रभू भेव दे जणाईआ। राम किहा जिस दी सेवा करे पाणी पौण, धरनी धरत सीस निवाईआ। जिस ने कलिजुग हँकारी मारना रौण, राह धुर दा इक्क वखाईआ। माया धारीआं भन्ने धौण, कूड़ी मेटे शहनशाहीआ। गुरमुखां अमृत बरसे मेघ सौण, अगनी अंदरों तत्त गवाईआ। चार वरन एका घर आए वसाउण, अठारां बरन दा डेरा ढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला दस्से गौण, वाहवा सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं अन्त आए मुकाउण, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक्क सुणाईआ।

सीता अन्तर आई हैरानी, नैण मीट ध्यान लगाईआ। हत्थ रक्खया उत्ते पेशानी, मस्तक लिआ दबाईआ । राम किहा औह वेख खेल महानी, हरि करता आप कराईआ। गोबिन्द सूरा मर्द मरदानी, जोधा इक्क अखवाईआ । जिस दी सध्धरां भरी जवानी, बुढेपा रंग ना कोई रंगाईआ। जिस दा शब्द तीर कानी, कलमयां दा लहणा दए मुकाईआ। कूड़ क्रिया मेटे बेईमानी, माया ममता मोह दए गवाईआ । प्रभ मिलण दी मंज़ल दस्से आसानी, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाईआ। सति सरूप रखाए जगत जिस्मानी, रोम रोम ना कोई कटाईआ । रहबर हो के मंज़ल दस्से इक्क रुहानी, रूह बुत्त करे सफाईआ। इक्को कलमा नाम कलामी, कायनात करे पढ़ाईआ। मेल मिलाए पुरख अनामी, मेला होवे सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक नूर अलाहीआ।

सीता नेत्र नैण खोल्लया, ज़िमीं असमान ध्यान लगाईआ। राम खुशीआं दे विच्च बोलया, सहज नाल दृढ़ाईआ। उह वेख गोबिन्द दो जहान विचोलया, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश पताल गगन गगनंतर पड़दा रिहा उठाईआ। जिस ने पुरख अकाल दा कंडा तोलया, तराज़ू धर्म दा हत्थ उठाईआ। उहदा फरके खब्बा सज्जा डौलया, बाहू बल इक्क जणाईआ। जिस ने कलिजुग कूड़ी क्रिया मेटणा रौलया, हउमे हंगता दए मिटाईआ। सच दवार एकँकार साचा देणा खोल्लया, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। उस ने लहणा देणा पूरा करना काहना कृष्न कला सोलया, अनक कलधारी प्रभ आपणे नाल मिलाईआ। जिस दा बस्त्र सोहवे चोलया, चोली तन मिले वड्डयाईआ। उस ने अमृत उठ तक्क लै सीता जन गुरमुखां अंदर डोलया, निझर झिरना दित्ता झिराईआ । सद वसे अन्तर आत्म कोलया, हरि मन्दर साढ्ढे तिन्न हत्थ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त लक्ख चुरासी घट घट अन्तर निरंतर हो के मौलया, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ।

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

राम किहा सीता औह वेख मैनूं शब्द गोबिन्द रिहा दिख, दीखिआ विच्च जणाईआ। जो सभ दा लेखा रिहा लिख, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। चार वरन जिस दा होणा सिख, सिक्खी सिख्या इक्क समझाईआ। सभ दा पूरा करे भविख, भविख्त आपणे नाल मिलाईआ। उस ने इष्ट बणाउणा इक्क, एकँकार देणा दृढ़ाईआ। जन भगतां अंदर जाणा टिक, गृह मन्दर सोभा पाईआ। गुरमुखां रहणा विच, विचला भेव खुल्ह़ाईआ। जिध्धर वेखण उधर पए दिस, चारों कुण्ट नज़री आईआ। मन कल्पणा मेटणी विस, विषे विकारां पन्ध चुकाईआ। सतिजुग दा साचा झोली पाउणा हिस, हिस्सा आपणा नाम समझाईआ। मैं हैरान होया पता नहीं लहणा किस किस, अवतार पैगम्बर गुर सारे याचक नज़री

आईआ । उस झगढ़ा मिटाउणा पत्थर इट्ट, पाहन सीस ना कोई निवाईआ। अमृत बूंद बख्शणी निझर धारा छिट्ट, सवांती आपणा नाम टपकाईआ। विख रहण ना देवे विच, खिट पत्तित पुनीत दए बणाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटी केते कित, भज्जण वाहो दाहीआ। उह जन भगतां दरसन देवे नित, निझ नेत्र आपणा पड़दा लाहीआ। अबिनाशी हो के वसे चित, ठगौरी चित रहे ना राईआ। आत्म परमात्म बणे मित, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। अगला हुक्म खेल उहदा अनडिठ, अन्त समझ कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आपणे हत्थ रखवाईआ।

सीता किहा राम उह समां किस बिध वेखा, बिधी दे दृढ़ाईआ। जगत ना रहे भुलेखा, भाण्डा भरम भन्नाईआ। राम ने हत्थ रक्खया आपणे उपर केसा, केस खोल्ह के दित्ते वखाईआ। पैहलों रूप धरना दस दस्मेशा, फेर शब्दी डंक वजाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशा, सो गोबिन्द आपणी कार भुगताईआ। सरगुण धार बच्चे करने भेटा, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। दीन मज़हब दा अन्त पूरा करना ठेका, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। तूं याद रखीं कर लै चेता, चेतन्न हो के रिहा सुणाईआ । पुरख अकाल होणा इक्को नेता, निझ नेत्र भगतां दए खुल्हाईआ। झगड़ा मुकाए मुल्लां शेख़ां, शरअ शरीअत अन्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा लहणा दए दृढ़ाईआ।

राम किहा सीता सवाधान कर लै सुरती, धुर दा शब्द दिआं जणाईआ। तूं वी होणा उस वेले तुरदी फिरदी, तत्तां वाला सरीर हढ्ढाईआ। तेरी सार पावे जो धार वासी अनन्द पुर दी, पुरीआं लोआं तों बाहर आपणा खेल खिलाईआ । तेरी आसा पूरन होवे सतिगुर दी, सतिगुर आपणे रंग रंगाईआ। जगत कल्पणा विच्च ना होवे मुड़दी, जगत तृष्ना ना कोई वधाईआ। झट्ट सीता दोवें हत्थ जोड़दी, नमस्ते कह के सीस झुकाईआ। हाए राम राम हो के ना कदे छोड़ दईं, विछोड़े विच्च दुहाईआ। मेरा जगत जहान ना बेड़ा रोड़ दईं, रुड़दिआं दईं तराईआ। राम किहा तूं आपणा आप आपे उस प्रभू दे चरनां तों घोल दईं, घोली घोल घुमाईआ। निझ अन्तर निरंतर अडोल रहीं, अडुल होए सहाईआ। आत्म परमात्म हो के कोल रहीं, तन वजूद दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आत्म परमात्म सच्चा बोल कहीं, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। (१० पोह श सं ६ प्रकाश सिँघ दे गृह पिण्ड दड़)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सीता कहे मेरे राम ने खोल्ही दृष्ट, दृश अगम्म दित्ता वखाईआ। मेरा इक्को होवे इष्ट, इष्ट देव स्वामी बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दी मेटे हिरस, हरस दए गवाईआ।

मेहरवान हो के करे तरस, तृखा दए बुझाईआ। जोती जाता हो के आवे परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। भाग लगावे उपर धरनी धरत, धवल रंग रंगाईआ। चार जुग दी पूरी करे शर्त, शरीअत वेखे चाईं चाईंआ। मालक बण के फर्श अर्श, दो जहानां खोज खुजाईआ। सभ दा लहणा देणा पूरा करे कज़, गुर अवतार पैगम्बर लेखे लेखे विच्चों चुकाईआ। उस साहिब दा खेल होवे असचरज, अचरज लीला दए वरताईआ। जोधा सूरबीर मरदाना बणे मरद, बेअन्त आपणा हुक्म वरताईआ। गरीब निमाणयां वंडे दर्द, कोझयां कमलयां गले लगाईआ। मेरी आशा दी पूरी करे गर्ज़, निराला रूप ना कोई दरसाईआ। मेरी मनसा होवे तृप्त, तृप्त दी धार नूर जोत रुशनाईआ। संकत रहे कोई विक्त, कल कलेश दए गवाईआ। सति धर्म कराए लिखत, सतिजुग सच्चा राह प्रगटाईआ। प्रेम प्रीती आत्म परमात्म दस्स के इशक, आशक माशूक दा झगड़ा दए गवाईआ। लहणा देणा पूरा करे कलिजुग अन्त सुहेले दिवस, पोह दो छे वड्डयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक्क वखाईआ।

सीता कहे मैनूं दिसया दूर दुराडा, मेरा माही राम रहीमा। जिस दा हुक्म फरमाणा डाहढा, खेल करे आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदीमा। जिस दा भाणा वरतणा शब्दी धार सादा, दो जहान नौजवान देवे अगम्म फ़रमाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अनादी धार जुगादी शब्द ब्रह्मादी जोत विस्मादी निरगुण निरगुण निरगुण रूप महाना। (१० पोह शहनशाही सम्मत ६ सेवा राम जौड़ीआं)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

राम ने बिन अक्खरां लिखी पाती, पत्रका लई बणाईआ। सीता दी रक्खी उत्ते छाती, सहज नाल टिकाईआ। उह वेख आपणा कमलापाती, राम दा राम बेपरवाहीआ। जिहड़ा जुग चौकड़ी देवे दाती, नित नवित्त आप वरताईआ। जिस वेले कलिजुग होवे अन्धेरी राती, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म दा बणे साथी, सगला संग वखाईआ। तूं तक्कणा खेल पुरख अबिनाशी, नैण नैण नैण उठाईआ। मंज़ल चढ़नी घाटी, जगत पन्ध रहे ना राईआ। आत्म सुहाउणी खाणी, सुहञ्जणी धुर दे रंग रंगाईआ। धुर दा बणना साचा नाती, जो नातवां आदि जुगादि दा नूर नूर अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सदा सद सभ दा लहणा देणा लेखा रिहा वाची, वाचक हो के आपणे विच्च छुपाईआ। (१० पोह श सं ६ झण्डू राम दे गृह जोड़ीआं)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सीता कहे मैं खेल वेखी अदुती, जी राम राम ने दित्ती वखाईआ । मैं मन्दरां विच्च रही ना सुत्ती, सोवत जागत रूप बदलाईआ। नज़र आई कलिजुग अन्त सुहञ्जणी रुत्ती, रुतड़ी हरिजू इक्क महकाईआ। अवतार पैगम्बर गुरूआं दी औध वेखी मुक्की, अग्गे होर ना कोई वधाईआ। मैं शब्द अवाज़ सुणी दो तुकी, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जिस नाल भगतां नूं मंज़ल मिलणी उच्ची, उच्च अगम्म अथाह आपणे घर वसाईआ। आत्मा होणी सुच्ची, सुच्च संजम इक्क दृढ़ाईआ। जिस ने झगड़ा मुका देणा दसम दवार त्रैकुटी, मंज़ल आपणी इक्क वखाईआ। जिथ्थे होवे कोई ना दुःखी, सति सति विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ।

झट्ट राम बदलया आपणा पासा, हत्थ मस्तक उत्ते टिकाईआ। नैण मीट के कीता हासा, बुल्ल्ह बुल्ल्हां नाल टकराईआ। उह वेख मेरे राम दा तमाशा, तमाशबीन बणया नूर अलाहीआ। जिस दा चार जुग दस्सणा सभ ने खुलासा, भेव अभेद जगत समझाईआ । अन्तम उस दा नूर होणा प्रकाशा, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस नूं कहन्दे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता आपणा पड़दा आप चुकाईआ। सम्बल करे वासा, सति सतिवादी आसण सिँघासण इक्क सुहाईआ। जिस नूं झुकण पृथमी अकाशा, गगन गगनंतर निऊँ निऊँ लागण पाईआ । अवतार पैगम्बर गुरू होणे दासी दासा, सेवक सेवा सच कमाईआ । जिस दा हर घट निरगुण धार होणा वासा, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा पड़दा आप उठाईआ।

सीता कहे मेरी निगह बदली, बदल के रही जणाईआ । धुर राम होणा अदली, इन्साफ इक्क अखवाईआ। मकतूल रहणा नहीं कोई अदली, कातल दा डेरा ढाहीआ । जन भगतां मंज़ल बख्शी अंदरली, पर्दा परदिआं विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त आप सुहाईआ।

राम ने किहा सीता औह तक्क, बिनां अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस दा लेखा हकीकत हक़, हाकम धुरदरगाहीआ। ओस आउणा वत, वतन मातलोक वेखे चाईं चाईंआ। जिस वेले सृष्टी दी दृष्टी अंदर उबले रत्त, अगनी सके ना कोई बुझाईआ। अवतार पैगम्बर गुरूआं उस नूं लैणा सद्द, सद्दा देवण थाउँ थाईंआ। दीन मज़हब दी मेट हद्द, हदूद आपणी दए वखाईआ। किरपा करे पुरख अकाल यद, यदी आपणा वेस वटाईआ। शब्द सुणा के अगम्मी नद, धुन अनादी इक्क सुणाईआ । भगत सुहेले लक्ख चुरासी विच्चों लभ्भ, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। आपणी खेल आपे कर सबब्ब, साहिब सुल्तान निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ । चार जुग दा लहणा देणा मेटे हब, लेखा अवर रहे ना राईआ। जिस दी सरन सरनाई सारे जाणे ढठ्ठ, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। जिस झगड़ा मुकाउणा अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी वेखे चाईं चाईंआ। नाता रहण नहीं देणा मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, काअबयां परे करे पढ़ाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर

निरगुण धार होवे प्रगट, परवरदिगार सांझा यार निरगुण धार नूर अलाहीआ। जिस ने सतिजुग सति धर्म दा खोलुणा हट्ट, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। सीता खिड़ खिड़ा के पई हस्स, वाह राम तेरे राम राम दुहाईआ। की उह वसे घट घट, गृह गृह आपणा डेरा लाईआ। राम झट्ट उठ के पया नस्स, नौं नौं कदम उत्तर पूरब वल वधाईआ। फेर बैठ गिआ झट्ट, हत्थ छाती उत्ते टिकाईआ। फेर फड़ के सज्जा पट्ट, ज़ोर नाल दबाईआ। सीता उह वेख मेरा राम समरथ, जो सभ दा पिता माईआ। जिस कलिजुग अन्तम आपणे प्यार भगती दी देणी भगतां नूं वथ, बिनां भगती तों भगत दए बणाईआ। मेहरवान हो के अंदर जावे वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। तीर अणयाला निरंतर मारे कस, दुतीआ भउ दए गवाईआ। सीता किहा की राम एह सच, राम किहा हां, सच सच राम गुसाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त सभ कुछ उस दे हत्थ, देवणहार इक्क अखवाईआ। जिस दी महिमा सदा अकथ्थ, कथनी कथ ना सके राईआ। जिस ने उल्टी गेड़नी लट्ठ, सृष्टी दृष्टी दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लेखा जाणे जगत जीव जहान तत्तव तत्त, तत्त आपणा ना कोई जणाईआ । (१० पोह शी सं ६ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सीता कहे राम मैं निगह मारी वल लहन्दे, कलिजुग अन्त अक्ख खुलाईआ। तेरां सौ सतासी रिषी शब्दी धार कुछ कहन्दे, बावन दा लेखा रहे सुणाईआ। कट्ठे हो के धरनी उत्ते बहन्दे, बह बह बल प्रगटाईआ। सदी चौधवीं महल्ल मुनारे ढहन्दे, पत्थर इट्ट रहे कुरलाईआ। भगत भगवान दा भाणा सहन्दे, सिर सके ना कोई उठाईआ। जीव कल वेखे वहण वहन्दे, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। खेल तक्कया सरहाणा पैंदे, दोवें धारां खोज खुजाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरसती दे तक्के लहंगे, अंगी अक्खां नाल वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां सिर लेखे वेखे पैंदे, हिसाब मंगे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

धर्म दी धार वेखी जगत सिसक, सिसकीआं विच्च दुहाईआ। अमृत रस झिरना ना रिहा रिसक, बूंद सवात ना कोई टपकाईआ। मनमत दा होणा इशक, आत्म परमात्म प्यार ना कोई बणाईआ। झगड़ा पैणा टांक जिसत, निरगुण सरगुण दए दुहाईआ। धर्म दी धार तों सारे जाणे खिसम, सच कदम ना कोई टिकाईआ। जगत नेत्रां दा होणा गृहसत, वड्डा छोटा बचया रहण कोई ना पाईआ। सच राम दा मन्ने कोई ना इष्ट, इट्टां पत्थरां सीस सर्ब निवाईआ । उह आशा देंदी संदेशा वशिष्ट, विषेश रही समझाईआ। पीरां दा लेखा मुकणा बहसत, अवतार सवरगाँ दा पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ।

सीता कहे रिखी करन इशारे, सतिजुग ध्यान लगाईआ। प्रभू प्रभ निमस्कारे, परम पुरख सरनाईआ। जिस वेले कल आए किनारे, कलिजुग पन्ध मुकाईआ। लेखा मुक्के पैगम्बर गुर अवतारे, अवतरी आपणा वेस वटाईआ । निरगुण नूर करे ज़ाहरे, ज़ाहर जहूर डगमगाईआ। अमल कराए चौथे जुग पाए सारे, महांसारथी आपणा रूप बदलाईआ। लेखे लाए जो कौल कीते बल दवारे, बावन शहादत इक्क भुगताईआ। भगत सुहेला बण आप निरँकारे, निरवैर आपणा रंग रंगाईआ। जिस नूं सर्ब करन निमस्कारे, नमों नमों सीस झुकाईआ। सो साहिब सुल्ताना मेहरवाना आपणी किरपा धारे, धरनी धरत धवल उत्ते वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आए भगतां दे विच्च अखाड़े, आपणा बल प्रगटाईआ। (११ पोह श सं ६ गुरनाम सिँघ पिण्ड सीड़)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

राम कहे एथ्थे ताना माना हुंदे सी दो पोसती, भंग पी के सूटा सुलफे वाला लगाईआ। मस्ती लैंदे सी नशे वाली झोक दी, झुक झुक इक्क दूजे नूं सीस निवाईआ। एह आदत सी उन्नां दी रोज़ दी, तेती साल एसे तरां झट्ट लँघाईआ। विच्चों आशा सी इक्क निर्मल जोत दी, जिस दी दिवस रैण मंग मंगाईआ। कदी कदी गल्ल करदे सी होश दी, अक्खां लाल लाल रखवाईआ। सिफ्त वेखदे सी ब्रह्मा वाले कोश दी, इक्क दूजे नूं कन्नां विच्च जणाईआ। साड्डे कोल लयाकत नहीं जेहड़ी सचखण्ड पहुँचदी, पुज्ज के प्रभ दा दर्शन पाईआ। कदी कहण आसा रक्खी ओस दी, ओड़क लए मिलाईआ। फेर कहण प्रभू नालों साड्डी मुतहरी चंगी जेहड़ी साड्डी भंग घोलदी, प्याला सानूं दए प्याईआ। इउँ जापदी जिवें एह पिछली साड्डी गोत दी, पुराणी साथण नज़री आईआ। सानूं पीन्दयां नूं कदी नहीं रोकदी, सगों कासिआं विच्च आपणा आप उलटाईआ। सानूं कदी नहीं टोकदी, गुस्सा ना कोई वखाईआ। कदी इक्क दूजे नूं कहण साड्डी बुद्धि नहीं कोई खोट दी, असीं खरे प्रभ नूं रहे ध्याईआ। सानूं खबर नहीं किसे लोक दी, परलोक ना कोई जणाईआ। सानूं मुहब्बत इके दी मोहित दी, जो मोहणी रूप वटाईआ। कदे गंढु वेखण आपणी लंगोट दी, जो कमर नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

धरनी कहे पोसती दोवें हुंदे सी ताजे मोटे, ढिड्ड मटकयां वांग बणाईआ। उतों सिर हुंदे सी घोटे, बोदी जंझू ना कोई वखाईआ। तेड़ हुंदे सी लंगोटे, तन बस्त्र ना कोई छुहाईआ। रात नूं जागण दिने सी सोते, अक्खां बन्द वखाईआ। सोचां विच्च मारदे सी गोते, मन दे वहणां विच्च आपणा आप डुबाईआ। कदी कदी होश विच्च आ के रक्खदे सी इक्क लोचे, लोचण नैण खुल्हाईआ । असीं गुरू नहीं मन्नणे बहुते, इक्को पुरख अकाल मिल के खुशी मनाईआ। जिस दे नाल साड्डे तन मन दे कपड़े जाण धोते, दुरमत

मैल रहे ना राईआ । साड्डे भाग ना रहण सोते, सुत्तयां दए जगाईआ। इक्क दिन राम आ गिआ उह भंग रहे सी घोटे, रगढ़ा रगढ़े विच्चों रखवाईआ। ओन तक्कया ठीक समें मौके, मुकम्मल वेख वखवाईआ। इक्क ने अग्गों किहा रो के, दूजे हस्स के दित्ता वखवाईआ। जे साड्डे प्याले फड़ावे धो के, इस खुशी विच्च तैनूं भंग दईए प्याईआ । किते साड्डे वरगा वेखीं हो के, नशयां विच्च ज़िमीं असमानां तों परे उडाईआ । तूं सोहणा जवान किते साड्डे राम नूं लयावीं मोह के, आपणे नाल मिलाईआ। ज़रा सानूं अंदरों वेख जोह के, किड्डी प्रीत प्रभ दे नाल बणाईआ। फेर मस्ती विच्च मूंह दे भार हो के, मथ्थे ज़िमीं उत्ते टिकाईआ। फेर कहण असीं प्रभ दे चरन आए छोह के, ज़िमीं असमानां पन्ध मुकाईआ। फेर आपणी भंग बुक्कल विच्च लको के, हस्स हस्स ताली दित्ती लगाईआ। फेर आकड़ नाल खलो के, बाहवां उपर लईआं उठाईआ। फेर उंगलां उंगलां विच्च परो के, खिच्चण वाहो दाहीआ। फेर आपणा मुख धो के, मुखों कहण तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खलाईआ।

पोसती कहण कदी पीती उ भंग, जांदयां राहीआ दे सुणाईआ। वेख चढ़दा किस तरां रंग, रंगत इक्क वखवाईआ। अज्ज दी रात साड्डे कोल लै अनन्द, अनन्द तैनूं दईए वखवाईआ। फेर साड्डा बण जावीं संग, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। नाम जपण नालों एहदे विच्च सोहणा ढंग, मस्ती विच्च जगत वासना ना कोई रखवाईआ। बिना अक्खां तों मुक्क जावे पन्ध, आपणी होश रहे ना राईआ। चार पहर एसे तरां जांदे लँघ, अग्गे वास्ते फेर रगढ़ा दईए लगाईआ। जदों गाईए तूं मेरा मैं तेरा छन्द, दूजा राग ना कोई अलाईआ। राम किहा ज़रा घुट्ट के मीटो दन्द, ज़ोर नाल दबाईआ। फेर लउ अनन्द, अक्खां खोलु के मेरीआं अक्खां विच्च टिकाईआ। मुखों कहो तूं मेरा मैं तेरा छन्द, दूजी अवर ना कोई वड्डयाईआ। फेर तुहानूं होवे ठंड, सांतक सति वरताईआ। ओन्नां दोहां ने इक्क दूजे नूं मारे कंध, मोढ्डयां नाल हिलाईआ। अज्ज वेख लईए एहदा अनन्द, की सानूं दए वखवाईआ। जां अक्खां मीटीआं नज़र आया सूरा सर्बंग, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

पोसतीआं आया इक्क सरूर, सुरती लई बदलाईआ। तक्कया अगम्मा नूर, जोत नूर रुशनाईआ । हुक्म दित्ता हज़ूर, नेत्र लउ खुलाईआ। जां वेख्या राम वस्सया जो सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। दोहां बेनन्ती कीती अग्गे हरि हज़ूर, निउँ के सीस निवाईआ। क्यों सानूं रक्खया दूर, तेरा नाम दुहाईआ। असीं मूर्ख मूढ़, तेरे हत्थ वड्डयाईआ। शब्दी हुक्म होया (तुसीं) राम दी लाई धूड़, जो राम राम रूप वटाईआ। फेर तुहाड्ढा लेखा मैं देवां ज़रूर, ज़रूरत सभ दी पूर कराईआ । जिस वेले कलिजुग अन्तम दीन दुनी होई कूड़, सच मिले ना कोई वड्डयाईआ । सभ दी दृष्टी होवे मूढ़, चतुर सुघड़ ना कोई वखाईआ । हंगता होए ग़रूर, हउमे मोह हलकाईआ । ओस वेले लेखा देवां ज़रूर, लहणा पूरा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ।

पोसती राम नूं गए झुक, इक्को वार सीस निवाईआ। राम ने दोहां दी पिट्ठ ते मारी मुक्क, हौली हौली लगाईआ। तुसां बदल जाणा रुख, दीन दुनी जाणी तजाईआ। सचखण्ड दवारे जाणा पुज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ । तन दीपक जाणा बुज्झ, होवे ना कोई रुशनाईआ। अगला भेव दस्सां गुज्झ, शब्द अगम्मा इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल वखाईआ।

राम ने किहा पोसती धरो ध्यान, ध्यान ध्यान विच्चों बदलाईआ। ताने माने तुहाड्ढा अन्तम होणा जहान, लोकमात रहण ना पाईआ । जिस वेले मेरा आवे श्री भगवान, कलिजुग अन्तम वेस वटाईआ। तुहानूं मानस जन्म देवे महान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तत्तां वाले बणा इन्सान, पर्दा उहला दए चुकाईआ। एसे धाम ते पहुंचे आण, तुहाड्ढा सोहणा संग बणाईआ । होवे मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। दे के धुर फ़रमाण, धर्म दी धार बंधाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा जगत पहुंचे आण, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खलाईआ।

ताने माने किहा राम रामे ठीक, ठीक दित्ता दृढ़ाईआ। केहड़ा वक्त केहड़ी तारीक, तारीख़ दे समझाईआ। राम किहा कलिजुग अन्तम सम्मत शहनशाही पंज प्रभ दी चले रीत, रीतीवान वेख वखाईआ। तुसां रक्खणी उडीक, लेखा दए मुकाईआ। ओनूं हस्स के खुशी नाल चरन छुहाया सीस, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। राम ने हत्थ फेरया पीठ, पुशत पनाह दित्ती वड्डयाईआ। मेरा शब्द धुर दी लीक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ताना माना अरजन सिँघ ते सिँघ रणजीत, पिछले जन्म दे पोसती, लेखा रिहा चुकाईआ। पुरख अकाला कर बख्शीश, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। राम दी शहादत आप कर तस्दीक, मोहर नाम वाली लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा सभ दे चीत, चेतन्न धार आपणी जोड़ जुड़ाईआ। (२६ चेत श स ५ कौड़ा मल सदन मल इट्टारसी)

पमपासर दा खेल तमाम, पूरब पिछला दए गवाहीआ। जिस वेले भीलणी कोल गिआ राम, आपणा पन्ध मुकाईआ। छाँदू नाम दा कोल हुंदा सी ग्राम, झौंपड़े पंज सत्त सोभा पाईआ। ओथ्थे महात्मा हुंदा सी महान, हँकार विच्च आपणा आप वधाईआ। उह लै के नौं बादाम, भीलणी कोल डेरा लाईआ। बण के सूरबीर बलवान, आपणा आसण लिआ जमाईआ। हरी ओम तत्त सति दा मंत्र लग्गा गाण, नमों नमों कह सुणाईआ। जिस वेले आया श्री भगवान, धनुख कंधे उत्ते लटकाईआ। ओस हस्स के किहा नादान, की तेरे विच्च वड्डयाईआ। क्यों भुक्खी ग़रीबणी दे घर पहुँचया आण, आपणा पन्ध मुकाईआ। भीलणी अचानक वेख होई हैरान, खुशीआं विच्च इधर ओधर भज्जी चाईं चाईंआ। हाए मेरा राम मेरे राम, राम मेरे मेरी तेरी दुहाईआ । मैं भेटा विच्च की रक्खां पकवान, की सेव कमाईआ । किस दे कोलों मंगाँ दान, किस दे अग्गे झोली डाहीआ। चारों

कुण्ट मारे ध्यान, साथी नज़र कोई ना आईआ। अन्तर होई हैरान, हिरदे विच्च कुरलाईआ। निउँ के कीता प्रनाम, सीस दित्ता झुकाईआ। पिट्ठ ते हत्थ रक्खया अंदर होया ज्ञान, बुद्धि मिली चतुराईआ। समझ आ गई मैं की आसा रक्खी महान, हिरदे विच्च टिकाईआ। सो फल खवावां जेहड़े इक्ठे कीते विच्चों ज़िमीं असमान, झाड़ां दीआं चोटीआं उत्तों लाहीआ। जे कर लवे परवान, मैं लक्ख लक्ख शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

भीलणी अन्तर कीती विचार, हिरदे ध्यान लगाईआ। जेहड़े बेर रक्खे संभाल, टुक्क टुक्क के मिट्ठे भगवान लई लुकाईआ। उह खाण आ गिआ राम, मेरी राम दुहाईआ। खुशीआं विच्च नच्ची टप्पी बुड्ढी नड्ढी होई जवान, आपणे मन तन लई अंगढ़ाईआ। पंजां टाकीआं दी पंजां रंगाँ दी गल विच्च चोली जिस दीआं कन्नीआं चीथड़े रूप दसाण, मैले कुचैले सोभा पाईआ। ओधरों महात्मा रक्ख के बैठा ध्यान, आपणी अक्ख उठाईआ। गुस्से विच्च कहे ओ भलीए, ओ झल्लीए, ओ मूर्ख, आह मैथ्थों लै बादाम, इस नूं दे खवाईआ। सुक्के बेर कदे ना हुंदे परवान, राम राजा दशरथ बेटा अयुध्या वासी मुख ना कदे छुहाईआ। भीलणी नेत्र रो के हन्झ वगा के लग्गी कुरलाण, कूक कूक सुणाईआ। मैं तेरी तूं मेरा राम, राम तेरे हत्थ वड्डयाईआ। मेरे घर मेरे दर मेरे गृह एहो सच्चा पकवान, जो तेरी भेट चढ़ाईआ। तूं मेरा परमात्म पती तूं अधार पराण, पराणपति तूं ही इक्क अखवाईआ। मैं तत्तां वाला तेरा इन्सान, जीव आत्मा तेरी ओट तकाईआ। राम हस्स के लग्गा चबाण, छिलकयां नाल गिटकां गिआ खाईआ। भीलणी किहा तेरी किरपा होई महान, प्रभ पुनीत दित्ती बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ।

जद महात्मा वेख्या राम बेर खांदा, खुशीआं विच्च समाईआ। उठ के नेड़े आंदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं राही क्यों नहीं होर राहे जांदा, भुक्खयां नंगयां दर क्यों डेरा लाईआ। एह कमली झल्ली कोझी एस भीलणी नूं कौण बुलांदा, तूं ग़रीबणी दे हत्थों खा के बैठा आसण लाईआ। राम निगाह नाल तकांदा, नैण नैणां विच्च टिकाईआ। हत्थ उत्ते हत्थ मार के किहा, आह त्रेता औह द्वापर जांदा, अन्तम कलिजुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रूप बदलाईआ।

राम किहा एह ग़रीबणी नहीं मेरे प्रेम धार दा भगत, भगवन विच्च समाईआ। तूं निगाह मार विच्च जगत, कलिजुग अन्तम दिआं वखाईआ। तेरी हँकार वाली शर्त, सहजे पूर कराईआ। तैनूं जन्म लैणा पैणा फेर उत्ते धरत, धवल मिले वड्डयाईआ। माया दरब नाल तेरी पूरी हुंदी रहणी गर्ज़, दीन दुनी विच्च वड्डयाईआ। पर याद रखीं प्रभ दा खेल होणा असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। तूं आपणे आप नूं अखवौंदा मर्द, सूरबीर वड्डयाईआ। ग़रीबां नाल नहीं वन्डया दर्द, दुखीआं वेख के ताली दित्ती वजाईआ। प्रभू दा खेल सदा असचरज, समझ सके कोई ना राईआ। जिस वेले मेरा राम आया

परत, पतिपरमेश्वर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ।

राम किहा एह भीलणी बड़ी प्यारी, प्यार विच्च समाईआ। एह मेरे चरनां तों बलिहारी, मैं एहदे चरन धो के अमृत दिआं वखाईआ। याद रखीं हुण तूं पुरुष फेर बणेंगा नारी, नर नरायण हुक्म दए वरताईआ । एह झल्ली नहीं तूं झल्ली बणेंगा दुखयारी, दुःखां विच्च दुहाईआ। तेरी माया तेरी पैज ना सके सवारी, तेरा साथ ना कोई निभाईआ। होणा पए दुखयारी, दुःखां विच्च दुहाईआ। साक सनबंधी मात पित भैण भाई पुत्र धी पती कन्त सारे करन गिरआज़ारी, सांतक सति ना कोई कराईआ। बिना राम दे राम तों तेरा लहणा देणा लेखा कज़ा मकरूज सके ना कोई उतारी, हिसाब बेबाक ना कोई कराईआ। राम दा हुक्म मेट सके ना कोई संसारी, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव सारे देण गवाहीआ। जगत हिकमत चले कोई ना कारी, जिंनां चिर प्रभू ना दया कमाईआ। सो समां बीत्तया जुग लँघया वक्त आ गिआ अन्तम वारी, अन्तश्करन वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सभ दा लेखा दए मुकाईआ।

ओस ने सुण के राम दा संदेश, आपणी मत लई बदलाईआ । निम्रता विच्च हो के पेश, सीस दित्ता झुकाईआ। मैं शंकर नूं मन्नदा ते पूजा करां गणेश, इक्को ध्यान लगाईआ। तेरा बचन सदा विषेश, जो संदेशा दित्ता सुणाईआ। पता नहीं मेरी बुद्धि क्यों होई मलेछ, मैं राम तैनूं गिआ भुलाईआ । राम ने किहा ज़रा कलिजुग वल वेख, तैनूं दिआं जणाईआ। जिस वेले मात पित भैण भाई नार कन्त दा रहणा नहीं हेत, भगत भगवान मीत ना कोई बणाईआ। उह महीना होवे चेत, रुत्त रुतड़ी बसन्त रूप महकाईआ। तेरा लेखा तेरा लहणा तेरा पूरब जन्म पूरन लए वेख, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। तेरे जन्म कर्म दी फेर बदल देवे रेख, मरन दा लेखा रहे ना राईआ। एहो हुक्म एहो प्यार एहो मुहब्बत एहो राम दा संदेश, संध्यया वेला दित्ता सुणाईआ। सो लहणा अभुल्ल भुल्ल ना गिआ चेतन्न हो के रक्खया चेत, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा पूरब जन्म जन्म कर्म सभ दी पूरी करे करनहार दातार, आपणी दया कमाईआ। (२६ चेत श सं ५ इट्टारसी)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★